RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम और हिंदी

प्रा. उत्तम ओंकार येवले

अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पद्मश्री विखे पाटील महाविद्यालय (लोणी), प्रवरानगर, तहसील राहाता जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

परिवर्तन प्रकृति का नियम हैं। जैसे–जैसे मनुष्य जॉति का विकास आगे बढ रहा है वैसे–वैसे उसके सुख के साधन भी बढते जा रहे हैं। वैश्वीकरण के कारण पूरा विश्व एक हो रहा हैं। मानव की आवश्यकताएँ और उसके पूर्ति हेतू ज्ञान–विज्ञान के पंड़ितो ने जी–जान से मेहनत कर चार चॉद लगा दिए हैं। इक्कीसवीं सदी के इस आधुनिक युग में जनसंचार माध्यमों का बड़ी मात्रा में विकास और परिवर्तन हो रहा हैं। वर्तमान युग में इलेक्ट्रानिक उपकरणों का बड़ी मात्रा में इस्तेमाल हो रहा हैं इन इलेक्ट्रानिक उपकरणों ने संचार क्रांति उत्पन्न कर संपूर्ण विश्व को 'ग्लोबल व्हिलेज' बना दिया है। वर्तमान युग में जनसंचार माध्यम समाज के प्रमुख अंग के रुप में प्रकट हो रहे हैं। इन्होंने समाज, राष्ट्र, विश्व को एक परिवार बना दिया हैं। इन माध्यमों ने विविध विषयों और देश–विदेश के ज्ञान के क्षेत्र में अद्भूत उपलब्धियॉ प्रदान कर पूरे विश्व के समाज को चमत्कृत कर दिया हैं।

गति ही जीवन है। चलने,दौड़ने, आगे बढ़ने और व्यापक होने के अर्थ में 'संचार' शब्द का प्रयोग होता है। संचार शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है; जिसका अर्थ होता है चलना। जब हम किसी भाव, विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुंचाते है तो वहीं संचार कहलाता हैं। विचारों के आदान–प्रदान की सामूहिक प्रक्रिया जनसंचार कहलाती हैं। डेनिस मैकबेल इस संदर्भ में कहते हैं–''संचार को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों को संप्रेषण के रुप में स्वीकार किया जा सकता हैं। कोई भी व्यक्ति संचार के बिना जी नहीं सकता।''१

अत:स्पष्ट है एक व्यक्ति अर्थपूर्ण संदेश किसी दूसरे व्यक्ति या समाज तक पहुॅचाता है। संचार शब्द व्याख्या करते हुए 'बुकर' लिखते है–''संप्रेषण ऐसा कोई भी व्यवहार है जिसमें किसी अर्थ का आगत–निर्गत किया जाता है, जिसमें एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को संदेश दिया जाता है।''२

अर्थात संदेश या जानकारी का संचार करना पड़ता है। इस प्रकार जिन माध्यमों से हमें विभिन्न तरह की सूचनाएँ जानकारी आदि की प्राप्ति के साथ–साथ मनोरंजन होता है, उन्हें जनसंचार माध्यम कहते हैं। जनसंचार एक निरंतर चलनेवाली गतिशील प्रतिक्रिया हैं। इसके विकास और ज्ञान–विज्ञान के विविध आयाम प्रस्तुत किए हैं। इसने व्यापार, उत्पादन, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन, अनुसंधान, वाणिज्य, राजकीय, समाज, आदि को प्रभावित किया हैं। इसमें नीत नए आयाम जुड़ते ही जा रहे हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया का महत्व स्पष्ट करते हुए डॉ.विष्णू पंकज 'विश्व मीडिया' नामक ग्रंथ में लिखते हैं – '' यह बात सबकी समझ में आगई कि मीडिया सिर्फ समाचार देने या मनोरंजन करने का माध्यम मात्र नहीं हैं, सामाजिका विकास और देश की उन्नति में भी वह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं।'' ३ इस प्रकार इलेक्ट्रानिक मीडिया का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं।

भाषा और जनसंचार माध्यमों का चोली–दामन का रिश्ता हैं। वर्तमान युग में जनसंचार माध्यमों की भाषा को अनन्य साधारण महत्त्व प्राप्त हुआ हैं। जनसंचार के माध्यम भाषा के बिना गूॅगे माने जाएंगे। जनसंचार वाचिक हो या कायिक यह हर हाल में भाषागत होता हैं। जनसंचार माध्यम मानव समाज के लिए होने के कारण बिना भाषा के उनका विकास संभव ही नहीं। आज विदेशी राष्ट्र जपान, जर्मन फ्रान्स, चीन, रुस आदि देशों ने अपनी राष्ट्रभाषा में तेजी के साथ प्रगति की हैं। हिंदी के लिए भी यह सुनहरा अवसर हैं। यह अवसर हिंदी को विश्वभाषा के रुपमें स्थापित करेगा। आज हिंदी भारत की जनभाषा, राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा के रुप में स्थित है। इसकी सरलता,सहजता के कारण देश का हर नागरिक इसे लिख, पढ, और समझ सकता हैं। यदि जनसंचार माध्यम को आम आदमी तक पहुॅचना है तो उसे हिंदी के अलावा और कोई माध्यम नहीं हैं। वर्तमान में हिंदी भाषा सर्वगुण सपन्न होने के कारण जनमानस में उसने अपना स्थान मजबूत बनाया हैं। जनसंचार माध्यामों ने हिंदी को विकास एवं विस्तार का सुनहरा अवसर प्रदान किया है। इस संदर्भ में पुरणचंद टंडन कहते हैं –''सूचना एवं प्रौद्योगिकी का एक बहुत बड़ा लाभ हिंदी को मिला है और वह हें अंतर्राष्ट्रीय, मंच पर हिंदी का व्यापक स्तर पर अवतरण।''४ इस तरह हिंदी भाषा ने जनसंचार माध्यामों की सहायता से विश्वस्तर पर दस्तक दी। विश्वभाषा हिंदी का विस्तार संचार माध्यामों के स्तर पर व्यापकता से हो रहा है। वर्तमान

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संसार में जनसंचार माध्यामों ने क्रांति का विस्फोट कर दिया है। दूरभाष, मोबाइल, कम्प्यूटर, इंटरनेट, रेडिओ, फिल्में, न्युज चैनेल्स, ईमेल, सूचना प्राधोगिकी, इमिटिंग पद्धति, वेबकॅमेरा, ब्लाग्ज, ट्विटर, इस्टाग्राम आदि सूचना तंत्र ने विश्व को एक ग्राम में तबदिल कर दिया है। कम्प्यूटर के माध्यम से इंटरनेट हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इसके द्वारा हम सारी दुनियॉ से जुड़ सकते है। हिंदी भाषा के विकास में अब इंटरनेट प्रभावशाली माध्यम बन गया है। जनसंचार माध्यमों को दो भागों में बाटा जा सकता है। पहला है मुद्रण माध्यम और दूसरा है इलेक्ट्रानिक माध्यम। मुद्रण माध्यम के अंतर्गत समाचार पत्र, पत्र—पत्रिकाए, मुद्रित साहित्य, जर्नल्स, पोस्टर, ग्रंथ आते हैं। इलेक्ट्रानिक माध्यम के अंतर्गत— रेडियो, फिल्म, दूरर्दशन कम्प्यूटर, इंटरनेट, ऑडियो विडियो, कॅसेट, मोबाईल, फॅक्स, इमेल, आदि आते हैं।

रेडिओ और हिंदी :—

रेडिओ एक महत्त्वपूर्ण एवं सस्ता संचार माध्यम हैं। यह समाज के सभी वर्गो और स्थानों पर पहुॅचनेवाला साधन है। इसके द्वारा कोई भी सूचना या जानकारी तुरंत लाखों— करोड़ों लोगों तक पहुॅचाई जाती हैं। इसके महत्त्व को विशद करते हुए श्री जबरीलाल पारख कहते हैं—''रेडिओ निरक्षर के लिए एक वरदान हैं। जिसके द्वारा वे सिर्फ सुनकर अधिक से अधिक सूचना ज्ञान एवं मनोरंजन हासिल कर लेते हैं।''५ रेडिओं की कीमत भी बहुत अधिक नहीं होती। इसी कारण सामान्य लोगों के लिए बेहद किफायतशीर है। इसे हम चाहे तो साथ में खेत—खलीहान में ले जा सकते हैं। इसकी भाषा समझने में बड़ी आसान होती हैं। आझादी के बाद ऑल इंडिया रेडिओ का प्रचार एवं प्रसार बड़े पैमाने पर हुआ। इस पर प्रसारित होनेवाले कार्यक्रमों की परंपरा बंड़ी लंबी हैं। ज्ञान—विज्ञान, सामाजिक—सास्कृतिक, साहित्यिक, राजनैतिक, शैक्षिक, कृषि, विभिन्न व्यवसाय आदि विविध विषयों से संबंधित कार्यक्रम हिंदी में प्रसारित होते हैं। इन कार्यक्रमों का आनंद लेनेवाले की संख्या दिन—ब—दिन बढते ही जा रही हैं।

इन कार्यक्रमों के कलाकार वर्ग को रोजी रोटी के साथ भाषा का महत्त्व और उसकी गहराई से अध्ययन आसान हुआ। जिस तरह एक जमाने में देवकीनंदन खत्री के उपन्यास 'चंद्रकांता संतती' को पढने और समझने के लिए बहुत—से लोगों ने हिंदी सीखी थी। इसी तरह बीना का गीतमाला, समाचार, भजन, कीर्तन, कृषि विषयक ज्ञान आदि कार्यक्रमों को सुनने और उसका आनंद लेने के लिए अनेक लोगों ने हिंदी भाषा आत्मसात करने की कोशिश की। हिंदी फिल्मों के गीतों ने तो कमाल का मनोरंजन पेश किया। ज्ञानी, अज्ञानी, अनपढ, उज्जड, मवाली, बूढें—बच्चें, महिला पुरुष आदि के हृदय पर इन गीतों ने राज किया। संत साहित्य में कबीर, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, आदि साहित्यकारों के पद और दोहे सुनकर हिंदी भाषा का विकास दिन ब दिन बढता ही जा रहा हैं। आज वह आम जनता की सुख—दुख की वाणी बनकर आगे बढ रहीं हैं। इस तरह आकाशवाणी के कार्यक्रमों द्वारा हिंदी का प्रचार एवं प्रसार भारत के कोने कोने तक पहुॅचा। कुलमिलाकर आकाशवाणी इस जनसंचार माध्याम ने सभी दृष्टि से हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की हैं।

दूरदर्शन और हिंदीः—

जनसंचार का दूसरा महत्त्वपूर्ण साधन दूरदर्शन हैं। यह दुनिया का सब से लोकप्रिय और परिचित माध्यम हैं। दूरदर्शन एक ऐसा माध्यम है जो सारी दुनिया को अपनी ओर आकर्षित करता हैं। भारत में १५ सिंतम्बर १९५९ में इसका आरंभ हुआ। उस समय इसका उपयोग केवल स्कूली शिक्षा एवं ग्रामसुधार को सामने रखकर किया था। आजकल समय के अनुसार सूचना और मनोरंजन के लिए इसका उपयोग अधिक हो रहा है। सरकारी चैनेलों के अतिरिक्त आजकल कई प्रायवेट चैनलों की बाढ आ गई हैं। विज्ञान एवं तकनीकी ने मनुष्य को इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम के रुप में दूरदर्शन जैसा अमूल्य उपहार दिया। आज चौबिसौ घंटे दूरदर्शन का प्रक्षेपण चैनल अपना स्वतंत्र समाचार, स्पोर्टस, मूवी, चैनेल्स निकाल रहा हैं। दूरदर्शन जैसे इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम के जरिए हिंदी को अपनाकर धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में कमाल कर दिया हैं। रामायण, महाभारत, अलिफलैला जैसे धार्मिक ग्रंथो का प्रसारण कर हिंदी को घर—घर तक पहुॅचा दिया हैं। इसी कारण वे धारावाहिक आज भी हमारे दिलों—दिमाग पर राज कर रहे हैं। धार्मिक धारावाहिक के बाद राहित्यिक धारावाहिकों की बाढ आई। इसमें कबतक पुकारुॅ, मृगनयनी, चित्रलेखा, रागदरबारी, तमस, गोदान, मैला, ऑचल, सूरज का सॉतवा घोड़ा, निर्मला आदि शामिल हैं। वर्तमान समय में सुबह से श्याम तक और श्याम से आधी रात तक दूरदर्शन पर हिंदी कार्यक्रमों की रेल चेल हैं। सुबह सुप्रभात से कार्यक्रमों की शुरवात होती हैं। शरीर स्वाथ्य से लेकर 'योगा' तक अनेक चैनेलों पर प्रसारण होता हैं। समाचार चर्चा में बहस, चित्रहार, फिल्म समीक्षा, धारावाहिक, कवि सम्मेलन, हास्यव्यंग्य, हॅलो डॉक्टर, सखी, परख, कौन बनेगा करोड़पति, आदि कार्यक्रमों ने अहिंदी भाषी लोगों को अपनीओर आकर्षित किया। समूचे देश—विदेश में दूरदर्शन के कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढ़ी। परिणामतः हिंदी हिमालय की चोटियों तक पहुॅच गई। कुलमिलाकर

दूरदर्शन ने हिंदी प्रचार एवं प्रसार में चार चॉंद लगा दिए। परिणाम स्वरुप हिंदी भारत की ही नही तो विश्व में फैल रही हैं।

फिल्म और हिंदी:—

आधुनिक जनसंचार माध्यामों में फिल्म का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। दृश्य और श्रव्य की विशेषता के कारण यह अत्यंत प्रभावी साधन माना जाता हैं। फिल्मों के करण ही हिंदी भाषा क्षेत्रीय सीमाओं को लॉंघकर देश के कोने—कोने तक पहुॅंच चुकी हैं। हिंदी न जाननेवाले भी हिंदी फिल्मों को देखने में रुचि रखते हैं। सिनेमा साहित्य से जूड़ा हैं। भारतीय सिनेमा में साहित्यिक स्तर के सृजनशील, अभिव्यक्ति की समृद्धशाली परंपरा रही हैं। मुन्शी प्रेमचंद, सूदर्शन, प्रदीप, कमलेश्वर, भगवती चरण वर्मा, फनिश्वरनाथ रेणू, अमृतलाल नागर, रामअवतार त्यागी, नरेंद्रशर्मा, आदि लेखक फिल्म दुनिया से जुड़े थे। उन्होंने फिल्मी दुनिया में जो उॅंचाई प्राप्त की है उसमें हिंदी भाषा ही मुख्य हैं। शैलेद्र, हसरत जयपुरी, कैफी, आझमी, योगेश, बैरागी, गुलजार, प्रदीप नरेंद्र शर्मा, नीरज, जावेद अख्तर जैसे गीतकारों ने अपनी लेखनी से गीतों को ऐसे सजाया कि सुननेवालं दॉंतों तले उॅंगली दबाकर देखते ही रह गए। इन गीतकारों ने अपने गीतों के माध्यम से प्रेम, सौदर्य के उच्च मानदंड स्थापित किए। ये मानदंड भाव और भाषा दोनों पर रहे। हिंदी और उर्दू से मिश्रित गीतों का प्रभाव आम लोगों के बीच में इतना लोकप्रिय हुआ कि आज भी लोग इस भाषा और भाव के संगम को भूले नहीं हैं। उनके गीतों की लय, ताल, नाद ने जन—जन के हृदय और मास्तिक को झकझोरा हैं। हिंदी को अखिल भारतीय स्वरुप एवं अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी को स्वी कृति दिलाने में भारतीय सिनेमा और उसके गीतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

कम्प्यूटर और हिंदी:—

कम्प्यूटर एक ऐसा यंत्र है जो मनुष्य के मास्तिष्क भॉंती ही काम करता हैं लेकिन मनुष्य के मास्तिष्क से कई अधिक तेज होता हैं। कम्प्यूटर में हिंदी की बदलती संभावनाओं को ध्यान में रखकर कम्प्यूटर का आगमन पत्रकारिता के क्षेत्र में वरदान सिद्ध हुआ। पत्र कारिता से जुड़ी विभिन्न प्रणालिया, सूचनाऍं, ग्राफिक्स भाषण मुद्रण आदि से कम्प्यूटर के विभिन्न पद्धतियों का उपयोग नि:संदेह सराहनीय हैं। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संगणक तकनीक को अपनाया जा रहा हैं। स्कूल कॉलेज से लेकर विश्वविदयालय तक, और टेलीफोन बील से लेकर हवाई टिकट तक व्यापक स्तर पर हिंदी का प्रयोग हो रहा हैं। कम्प्यूटर के कारण समय और परिश्रम में बचत हुई है। मनुष्य के कार्यो में दफ्तरों और कार्यलयों में तेजी आई है। सही परिणाम सही समय पर देने की चुनौती कम्प्यूटर ने स्वीकार कर ली है। पहले—पहल कम्प्यूटर की सारी जानकारी अग्रेंजी में थी मगर आजकल अब यह जानकारी हिंदी में भी उपलब्ध हो रही है। प्रिंटर ने तो इसकी उपलब्धि में कमाल कर दी है। कोई भी पिछली जानकारी पॉच—सात मिनिट में आपके हाथ आ जाएगी। कुल मिलाकर कम्प्यूटर ने हमारे परिश्रमों की बचत की है। वर्तमान युग में यह लिखाई—पढ़ाई में भी हमारी मद्द कर रहा है। वर्तनी की शुद्ध अशुद्धता की गलतियों कों भी सुधार रहा हैं।

इंटरनेट और हिंदी:—

इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यम में इंटरनेट ने आज सूचना के संप्रेषण को इतना दृतगति एवं आसान बना दिया है। मा ऊस की एक क्लीक से ही मनचाही जानकारी आप कम्प्यूटर पर नेट की सहायता से प्राप्त कर सकते हैं। सच कहुॅं तो इंटरनेट अलाउद्दीन का चिराग है। आज हिंदी अखबारों के नेट संस्करण लोकप्रिय होते जा रहे हैं। विश्व के किसी भी कोने में बैठकर ‘अमर उजाला’, दैनिक भास्कर, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्थान नई दुनियॉं के ऑनलाइन संस्करण देख सकते हैं। विदेशी ब्राडकास्टरों की वेबसाइट हिंदी में उपलब्ध हैं। इसे आप कभी भी देख सकते हैं। आज दुनिया भर की जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध है।

ईमेल और हिंदी:—

ईमेल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी को प्रभाव स्वरुप हिंदी भाषा में लिखी सामग्री का उपयोग संभव नहीं हो पा रहा था लेकिन सुवी इन्फरमेशन सिस्टम इंदौर ने हिंदी में निशुल्क सेवा का प्रारंभकर जनसंचार के लिए संपूर्ण विश्व में हिंदी के द्वार मुफ्त रुप से खोल दिए है। ईमेल इकतर्फा जनसंचार का प्रभावी माध्यम है। हिंदी में ईमेल करने की प्रक्रिया बहुत आसान है। इसमें संदेश तैयार कर प्राप्त कर्ता को इनबॉक्स में भेजना पड़ता है। प्राप्त कर्ता अपने समय के अनुसार इसे पढ़ सकता है। इसकी विशेषताऍं निम्न प्रकार से है—

१. इलेक्ट्रानिक बुलेटीन बोर्ड— इसमें होनेवाले संदेश कोई भी पढ़ सकता हैं।
२. पंजीकृत मेल— इस मेल को अनुमति लेकर ही पढ़ा जा सकता है।
३. नीजी मेल —यह मेल किसी को स्थानांतरित नहीं किया जा सकता।
४. मेल वितरण—यह मेल सभी को भेजा जाता है।

कूल मिलाकर हिंदी में इस इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों का इस्तेमाल बढता ही जा रहा हैं। इससें हिंदी अधिक सुलभ और विकसित हो रही हैं।

उपसंहारः—

वर्तमान समय में इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यामों का बोलबाला है। आज के इस वैश्विकरण के युग में इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों का विकास तेजी से हो रहा है। तकनी की के पंड़ितों ने अपनी अच्छी लगन और कठिन परिश्रम की बदौलत एक से बढकर एक इलेक्ट्रानिक मशिनों की खोज की। उन्होंने अपनी श्रेष्ठतम उपलब्धियॅ समाज को अर्पित की। इन इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों में रेडिओं, फिल्म, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, प्रिंटर, इमेल, इंटरनेट, मोबाईल आदि अनेक उपकरण शमिल हैं। आधुनिक युग में इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों ने संचार क्रांति कर दी हैं। जनसंचार के क्षेत्र में आई इस क्रांति ने वसूधैव कुटुम्बकम की संकल्पना को साकार बना दिया। इन्हीं जनसंचार माध्यमों के परिणाम स्वरुप समय और स्थान की दूरियॉ कम होती जा रही है। अब यह जनसंचार माध्यम समाज के आवश्यक अंग बनते जा रहे हैं। इसने व्यापार, उत्पादन, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन अनुंसधान, समाज और साहित्य आदि को प्रभावित किया है। हिंदी भाषा और जनसंचार माध्यमों का चोली —दामन का रिश्ता है। जनसंचार माध्यम भाषा के बिना गूॅगे हैं। यदि जनसंचार माध्यमों को आम आदमी तक पहुॅचना है तो हिंदी के अलावा और कोई चारा नहीं है। हिंदी भाषा वैज्ञानिक, सरल, एवं प्रभावी होने के कारण वह जन—जन की वाणी बनते जा रही है। इस युग में स्कूलों की पढाई से लेकर हवाई जहाज के टिकट आरक्षण तक इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों का इस्तेमाल हो रहा है। आज ज्ञान विज्ञान की दुनिया में इंटरनेट जनसंचार माध्यमों की आत्मा बनते जा रही है। कुल मिलाकर हिंदी के विकास में इन जनसंचार माध्यमों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है

संदर्भ सूचीः—

1. डॉ. गुप्ता यु.सी. इलेक्ट्रानिक मिडिया एवं सूचना प्रौधोगिकी पृ. सं. ३७
2. वहीं पृ.सं.३७
3. डॉ. पंकज विष्णू विश्वमौडिया पृ.सं.९९
4. राय प्रेमनाथ जनसंचार माध्यम एवं पत्रकारिता पृ.सं ४७
5. प्रतापसिंह योगेंद्र मिडिया और साहित्य पृ. सं. ४९

RRIJM 2015, All Rights Reserved